संरक्षक की कलम से

प्रिय पाठकों,

जैसा कि हम सभी जानते हैं आज समूचा विश्व जल एवं जल से जुड़ी विभिन्न समस्याओं से जूझ रहा है। मनुष्य को कहीं अनावृष्टि तो कहीं अतिवृष्टि और कहीं पेयजल की गुणवत्ता तथा जल के संरक्षण आदि भिन्न-भिन्न समस्याओं से दो-चार होना पड़ रहा है। विज्ञान के क्षेत्र में हो रहे नित-नए विकास के फलस्वरूप हमारे वैज्ञानिक जल के क्षेत्र में नए-नए आविष्कार एंव शोध कार्य कर रहे हैं जिससे कि आने वाले समय में जल संबंधी चुनौतियों का बेहतर ढंग से मुकाबला किया जा सके। आज के समय में जल संसाधन प्रबंधन पर विशेष ध्यान दिए जाने की आवश्यकता है। आज जहां जनसंख्या में तेजी से वृद्धि हो रही है वहीं जल स्रोतों में निरंतर कमी आ रही है। जल की गुणवत्ता पर भी प्रतिकूल प्रभाव पड़ रहा है। घरेलू एवं सिंचाई जलापूर्ति में भूजल का अहम योगदान है परंतु जिस गति से इन संसाधनों का अंधाधुंध दोहन हो रहा है उससे कई स्थानों में भूजल स्तर निरंतर गिरता जा रहा है और इसमें प्रदूषण बढ़ रहा है।

मुझे यह कहते हुए अपार प्रसन्नता हो रही है कि राष्ट्रीय जलविज्ञान संस्थान, रुड़की सरकारी कामकाज में राजभाषा हिंदी के प्रगामी प्रयोग को समुचित बढ़ावा देने के लिए वर्षभर हिंदी की भिन्न-भिन्न गतिविधियां आयोजित करता रहता है। हमारा प्रयास यह रहता है कि प्रशासनिक कार्यों के साथ-साथ तकनीकी एवं वैज्ञानिक प्रकृति के कार्यों में भी राजभाषा हिंदी का यथासंभव प्रयोग किया जाए। संस्थान के कार्य वैज्ञानिक एवं तकनीकी प्रकृति के हैं और आमतौर पर यह समझा जाता है कि तकनीकी कार्यों का निःष्पादन हिंदी में कर पाना सहज नहीं है। परंतु प्रेरणा एवं प्रोत्साहन के जरिए इन कार्यों में हिंदी का समुचित प्रयोग करने के प्रयास जारी हैं और इस दिशा में धीरे-धीरे ही सही लेकिन सफलता मिल रही है।

संस्थान तकनीकी एवं वैज्ञानिक विषयों की जानकारियों को सामान्य जनमानस तक पहुंचाने के लक्ष्य को ध्यान में रखते हुए पिछले 6-7 वर्षों से तकनीकी पत्रिका ''जल चेतना'' का प्रकाशन कर रहा है। प्रबुद्ध लेखकों की रोचक एवं महत्वपूर्ण रचनाओं के सहयोग से इस पत्रिका का सफलतापूर्वक प्रकाशन किया जा रहा है और इसकी हर स्तर पर सराहना की जा रही है। आज हमारे देश में समय और स्थान के अनुसार जल संबंधी समस्याएं भिन्न-भिन्न हैं। इन समस्याओं के समाधानों और उपायों की जानकारी को जनमानस तक पहुंचाने का कार्य कर रही है हमारी यह पत्रिका ''जल चेतना''। हमें ज्ञात है कि जीवन के इस अति आवश्यक तत्व की सुरक्षा का दायित्व देश के हर नागरिक का है। आज हमें जल के महत्व, उसके संरक्षण तथा बूंद-बूंद के सदुपयोग की जानकारी आम जनता को देने की आवश्यकता है।

मैं उन समस्त प्रबुद्ध लेखकों का हृदय से आभार व्यक्त करता हूं जिन्होंने इस पत्रिका के लिए अपने रोचक तथा महत्वपूर्ण लेख भेजकर इसके प्रकाशन में अपेक्षित सहयोग दिया है। पत्रिका का संपादक मंडल बधाई का पात्र है।

मैं पत्रिका की अपार सफलता की मंगल कामना करता हूं।

शरद जैन

(डॉ. शरद कुमार जैन)

निदेशक
राष्ट्रीय जलविज्ञान संस्थान
National Institute of Hydrology
(जल संसाधन मंत्रालय के अधीन भारत सरकार की समिति)
(Government of India Society under Ministry of Water Resources)
जलविज्ञान भवन
Jalvigyan Bhawan
रुड़की – 247 667, भारत
Roorkee - 247 667, INDIA